लेखक की लिखित पुस्तकें

श्री रामानन्द चरितम् (हिन्दी टीकोपेतम्)		।-)
तीर्थ-यात्रा	(हिन्दी)	।)
प्रियतम प्रार्थना	(मैथिली)	।--)
गंगा-गुण-गान	"	।–
मनोबोध तैंतीशा	"	१० न. पै.
महादेवस्तुति	"	१० न. पै.
विनय बतीशा	"	१० न. पै.
प्रिय पुकार पुकार	(हिन्दी)	।-)
शंकर स्तुति	"	।)
श्री सीताराम स्तोत्रम्	(हिन्दी, संस्कृत बंगला)	।)
श्री सीताराम पञ्चस्तवी	"	५ न. पै.
करुणाशतकम्	(संस्कृतम्) अमुद्रित	
वैद्यनाथ स्तोत्रम्	" "	
श्री रामानन्द पञ्चस्तवी	" मुद्रित	
श्री सीतारामादि पञ्चस्तवी	" "	१२ न. पै.

पुस्तक प्राप्ति स्थान

● **आदर्श श्री रामानन्द महाविद्यालय**
शंकुधारा, बाराणसी–३

● **अभिराम पुस्तकालय**
अन्टौर नवादा, दरभंगा (बिहार)

॥ श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ॥
॥ श्रीमतेरामानन्दाय नमः ॥

हमारा कर्तव्य

[२२-१० ६२ के अवसर पर दिया गया देश-प्रेम-पूर्ण भाषण]

रचयिता
अभिरामदास शास्त्री

प्रकाशक
अभिराम पुस्तकालय
अन्टौर नवादा, दरभङ्गा (बिहार)

प्रथम संस्करण १००० } गान्धी जयन्ती १९६३ { मूल्य १० नये पैसे

॥ नमो नमो भारत भूजनन्यै ॥

हमारा कर्त्तव्य

हम सभी मानव परम पवित्र उस देश के निवासी हैं जिसका नाम भारत वर्ष है। जहाँ पर हमारे आराध्य-देव भगवान् श्री राम और श्री कृष्ण का पवित्र अवतार हुआ था। जहाँ पर श्री राम और श्री कृष्ण के अतिरिक्त भक्तों को सुख देने के लिये भगवान् के लोक कल्याण-कारी अनेक अवतार हुए हैं। जिनके गुण-गान से हमारे देश के अनेक धार्मिक-ग्रन्थ भरे पड़े हैं।

प्यारे बन्धुओ! आप सब जानते हो कि यह भारतवर्ष कैसा है और इसके लिये कौन कौन लालायित हैं? इस भारतवर्ष के लिये केवल चीन, जापान, रूस और अमेरिका आदि देश ही नहीं बल्कि इसके लिये स्वर्ग के निवासी देवता भी लालायित रहते हैं। हम लोग यहाँ के निवासी हैं अतः अपने को धन्य समझना चाहिये।

मित्रो! लेकिन एक बात याद रक्खें कि हम लोगों को इस देश की रक्षा के लिये क्या करना चाहिये? अभी अभी हमारे देश के ऊपर जो

संकट आ पड़ा है उसके निवारण के लिये हम समस्त भारतीय मानवों को एक होकर तैयार हो जाना चाहिये। जिनमें जो शक्ति है उसी के द्वारा देश-सेवा में लग जाना चाहिये। अभी जाति पाति विचारने का समय नहीं रह गया है। मैं ब्राह्मण हूँ, मैं क्षत्रिय हूँ, मैं वैश्य हूँ, और मैं शूद्र हूँ इस तरह की गलत धारणा रखने से देश का सर्वथा उत्थान होना असम्भव है।

ओ देश की प्रिय-सन्तानो! आपकी जाति-पाति, आपकी साधुता, आपकी विद्वत्ता, आपकी वीरता और आपकी शूरता तभी सार्थक होगी जब आपके स्वर्ग को भी अपनी शोभा से ललचाने वाले देश की सर्वथा रक्षा होगी। यदि ऐसा न हुआ तो आप कहीं के नहीं रह जायँगे। पीछे कुछ हाथ नहीं लगेगा।

ओ मेरे धर्म-प्रिय धार्मिक भाइयो! आप भी तैयार हो जायँ। यह धर्म-प्राण भारतवर्ष आपको धार्मिक की उपाधि दिया है। आप इस सुन्दरतम देशकी अन्न जल और हवा से लालित और पलित हुए हैं। अतः आप भी अपने प्राण-प्रिय धर्म की रक्षा के लिये इस समय देश-रक्षा में लग जायँ। यह देश जब उस दुराचारी चीन के हाथ में चला जायगा तो फिर आपका धर्म सदा के लिये लुप्त हो जायगा। अतः आप भारतीय धर्म-प्राण वीरों का परम कर्तव्य हो जाता है कि वह पहले से अपने धर्म प्रधान देश की रक्षा करे। नहीं तो 'अब पछतावा क्या करे चिड़िया चुग गई खेत' की तरह पछताने की सिवाय और कुछ न मिलेगा।

हे मेरे देश की लौकिक, वैदिक और संस्कृति की रक्षा में सर्वथा समर्थ तपोधन विद्याधन विद्वानो! आप भी अब अपने प्रिय तम भारत देश की रक्षा से अपने तपः स्वाध्याय से पवित्र किये हुए विचारों को न रोकें। हे मेरे पवित्र देश के मनीषियो! आप यदि चाहेंगे तो देश की रक्षा होने में तनिक भी देर न होगी। अभी मानापमान का समय न रह गया है। आप जानते हैं कि यह संस्कृत-शास्त्र प्रिय भारतवर्ष अनादि काल से संस्कृतज्ञ, वेदज्ञ और कलाज्ञ पण्डितों से सुशोभित रहा है।

ओ मेरे कर्म काण्डी भाइयो! थोड़ा आप भी अब ध्यान देने की दया करेंगे। कर्म काण्ड-प्रिय इस भारतवर्ष को विदेशियों के हाथ में जाने से रोकिये। जिनमें जो शक्ति हो उससे अपने देश की रक्षा में लगिये इस देश की रक्षा पर ही सभी कर्म काण्ड की रक्षा हो सकती है।

हे परोपकार परायण साधुओ! आपतो अनादि काल से परोपकार ही में रत रहते हैं। इसी लिये तो आप साधु हैं। साधु का तो अर्थ ही है 'साध्नोति पर कार्य मिति साधुः' अर्थात् जो पर हिता कांक्षी हो, वे साधु हैं। अतः अपने इस विशिष्टगुण युक्त नाम की रक्षा कीजिये। आप इस बात को याद रक्खें कि यदि भारत वर्ष की सर्वथा रक्षा न हुई तो साधुता की भी बड़ी हानि होगी। आपको स्मरण होना चाहिये कि भारत वर्ष के पराधीन होने पर जो भारतीय धर्म सभी देशों के सभी धर्मों से बढ़ कर है, जिस धर्म के प्रचारक आपका सभी देशों ने गुरु माना है। यह आपकी सभी गुरुता मिट जायगी। जिसको श्री मनु जी ने भी अपनी प्रिय-नीति मनुस्मृति में लिखा है—

एतद्देश प्रसूतस्य
सकासादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्
पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥ (म० अ० २)

यह जो आपका और आपके पवित्र भारत देश का गौरव है वह विदेशियों के राज होने पर बिल्कुल नष्ट हो जायगा । आपके जिस प्रिय-देश में वालमीकि, व्यास, नारद शुकदेव और सनकादि आदि महान् ज्ञानी साधु हुए हैं वह देश एक दुराचारी, सर्व भक्षी, जघन्य कर्मकारी विदेशियों के हाथ में जाना चाहता है, अतः आप सब ऐसा सत्प्रयास करें जिससे कि यह सर्वदा सुरक्षित रह सके ।

अपने देश की प्रिय सन्तान साधुओ ! मेरी समझ से तो आप इस देश की सभी सन्तानों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ हैं, क्योंकि आपने ही तो चारो धाम (श्री बद्री आश्रम, श्री रामेश्वरम्, श्री जगन्नाथ पुरी और श्री द्वारका पुरी) के दर्शन व्याज (बहाने) से श्री भारत देश के गौरव को आपामर लोगों के हृदय में जगाया है। आपने ही तो कौपीन लगा कर अपने देश की रक्षा के लिये सूर, तुलसी, नानक, कबीर और समर्थ गुरु रामदास ऐसे महान् साधुओं को उत्पन्न किया है। जिनकी अमर वाणी संसार के सभी उन्नत देशों में मानव-मात्र का कल्याण करने वाली है। जिनका पूजन लोग आज भी प्रेम से करते हैं और उनकी जयन्ती भी मनाते हैं ।

हे मेरे पूज्य साधुओ ! क्या आप अपने नियमों के उन गूढ़ रहस्यों को

नहीं विचारते ? देखिये आपसे बढ़ कर देश-भक्त कौन होगा ? अपने देश की मिट्टी भी किसको इतनी प्यारी है ? यदि किसी के शरीर में भी थोड़ी मिट्टी लग जाती है तो वह अपने को अपवित्र समझने लगता है । परन्तु आप तो भारतीय मिट्टियों को अपनी प्रिय-देह के उस सर्वश्रेष्ठ अंग में लगाते हैं जिसको लोग ललाट कहते हैं । जिसके लिये शास्त्र भी कहा है कि 'सर्वेषु गात्रेषु शिरः प्रधानम्' । इतना ही नहीं केवल आप उसको अपने कपार में लगाते ही नहीं हैं; बल्कि आपने उसको बहुत बड़ी संज्ञा भी प्रदान की है । जिसका नाम है 'तिलक' । भला आप ही बताइये कि अपने प्राण-प्रिय देश को किसने ऐसी पवित्र-दृष्टि से देखा है ?

ओ मेरे देश के कर्णधार साधुओ ! जब जब देश पर आपत्ति आई तब तब आपने ही तो दण्ड-कमण्डलु और आर्वन-कौपीन लगाकर उस समाज दुःख-कष्टों से देश की रक्षा की है । 'वीर वन्दा वैरागी' भी तो आप ही में हुए थे । वीर शिवाजी में भी अपरिमित-बल देने वाले समर्थगुरु राम दासजी भी तो आपही के थे । भगवद् भक्ति के बहाने से भक्ति प्रिय भारत देश की रक्षा के लिये ही तो आपने अपना प्रिय-घर और द्वार को छोड़ रक्खा है । यदि ऐसा न होता तो सर्व-त्यागी बनकर भी कोई लेखक के, कोई सैनिक के और कोई महोप देशक के चक्कर में क्यों पड़ते ? आपके इन सभी उपकरणों से यही सिद्ध होता है कि आप प्रच्छन्न देश-सेवक हैं ।

परम पवित्र भारत देश के प्रिय उपासक साधुओ ! आप अपने तन मन धन से देश-सेवा तथा रक्षा करने में लग जायँ । एक विशेष बात

बताऊँ, जो बताने योग्य है। जिसके रहस्य को प्रायः बहुत लोग नहीं जानते हैं। जिससे आपकी इस बात को नहीं जानकर प्रायः अल्पज्ञ लोग हँसते हैं। वह है देश के प्रति आपका प्रगाढ़ प्रेम। क्योंकि आपने ही तो खाने के समय भी अपने देश के रक्षक भगवान् श्री राम और भगवान् श्री कृष्ण के नामों का उच्चारण किया करते हैं। अपने देश की पवित्र अयोध्या मथुरा, माया, (मिथिला) काशी, कांची अवन्ती (उज्जयिनी) श्री जगन्नाथपुरी, और श्री द्वारकापुरी आदि नगरों के नामों का प्रेम से उच्चारण करते हैं। पूज्य महात्माओ! आपही इस महान् देश की कल कल निनादिनी, अमृतोपम जल-श्राविणी गंगा, यमुना, सरयू, सोन, कमला, विमला, मिथिला, गंडकी, कौशकी, और मन्दकिनी आदि पवित्र नदियों के कल्याण करने वाले सुन्दर नामों का पाठ किया करते हैं।

ओ भारतीय धर्म-रक्षण परायण श्री महान्तगण! आप भी अपने स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अभी विदेश द्वारा प्राप्त कष्ट भारत वर्ष की रक्षा के लिये सावधान हो जायँ। आपको महान्त पद तो इसी लिये न मिला था। या महान्त पद की स्थापना तो इसी लिये न आचार्यों ने की थी कि समय पर श्री महान्त गण अपने देश, धर्म और उसके प्रेमी वीरों की रक्षा करेंगे। आप लोगों ने किया भी ऐसा ही है। परन्तु कुछ दिनों से आप अपने स्वरूपों को भूल कर 'किं कर्त्तव्यता' को प्राप्त कर रहे हैं। किन्तु अभी आप अपने पूर्व स्वरूप की याद करें और देश-सेवा में तन, मन और धन से अपना हाथ बटावें। इस बहती नदियों में अपना अपना हाथ धो लेवें।

प्रिय बन्धु महान्त गण! आप याद रक्खैं कि यदि हम आप अभी अपनी देश-रक्षा के लिये कटि-बद्ध न होंगे तो प्रायः यह देश विदेशियों के हाथ में चला जायगा। जिसका परिणाम बहुत ही बुरा होगा। इस पवित्र भारत देश में विदेशी धर्म का प्रचार-प्रसार होने लगेगा जो हम और आपके लिये महान् घातक होगा। जिस रूप में हम आज धर्म कर्म देख रहे हैं उसका फिर दर्शन भी कठिन हो जायगा। क्योंकि विदेसियों का जो अपवित्र सिद्धान्त है और राक्षसता तथा दानवता पूर्ण व्यवहार है उसी का बोल वाला होगा जो हम और आपके लिये असह्य होगा। जब अपना सिद्धान्त नहीं रह जायगा तो अपना सद्ग्रन्थ भी नहीं रह जायगा। जब धार्मिक ग्रन्थ नहीं रह जायँगे तो उससे सिद्ध होने वाली साधुता या धार्मिकता भी नहीं रह जायगी।

जब धार्मिकता नहीं रहेगी तो आपके और मेरे ये सुन्दर सुन्दर मन्दिर भी नहीं रहेंगे। मन्दिर के न रहने पर मन्दिर के जो देव श्रीराम, श्री कृष्ण, श्री शंकर और श्री दुर्गा हैं ये सब लुप्त हो जायँगे। अतः यदि आप इससे पहले तैयार हो जायँगे अर्थात् जग जायँगे तो पीछे वह कुछ बिगाड़ नहीं सकता है, क्योंकि लिखा है 'नभयं चास्ति जाग्रतः, अर्थात् जगे हुए व्यक्ति को किसी लुटेरे का भय नहीं रहता है। प्रिय पूज्य महान्त गण! आप लोग जानते हैं! किसी सर्वथा सुरक्षित देश ही में वहाँ का धर्म फूलता और फलता है। आज जो कुछ फूले फले धर्म को देख रहे हैं उसका एक मात्र कारण है आपके और मेरे पूर्वजों द्वारा कठिन तपस्या करके इसको बचाते आना। अब यह अपने योग्य रूप

को धारण किया था। परन्तु बीच ही में इसको सर्व गुण युक्त देखकर विरोधी गण खाना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में येन केनो पायेन इसकी रक्षा करना आपका परम कर्तव्य होता है।

परम श्रद्धेय सम्प्रदायाचार्य गण! अभी आप भी अपना आचार्यत्व देश-सेवा ही में लगावें, क्योंकि अभी आपस में वाद विवाद का प्रयोजन नहीं है। अभी जिस धर्म और पुण्य-प्राण भारत वर्ष में आप हैं उसीके ऊपर आपत्ति आ पड़ी है। यदि कहीं जघन्य-कर्मा विदेशियों के अधीन में यह देश गया तो हमारा आचार्यत्व नष्ट प्राय हो जायगा। अर्थात आचार्य रूप कार्य का कारण ही नष्ट हो जायगा। आचार्य तो सत्शास्त्राध्ययन से होते हैं। क्योंकि लिखा भी है:—

'आचिनोति च सर्वाणि—
धर्म शास्त्राण्य नेकशः।
स्वय माचरते यस्मात्—
तस्मादाचार्य उच्यते॥'

भला अब आपही विचार करैं कि जब भक्ष्याभक्ष्य-ज्ञान रहित लोग यहाँ आकर राज्य करेंगे तो हम और आपकी क्या दशा होगी। अतः अभी समस्त सम्प्रदायाचार्यों का कर्तव्य है कि सभी सम्प्रदाय के आचार्य और सन्त महान्त गण मिलकर देश-हितके लिये ठोश कदम उठावें। अभी मानापमान की भावना का त्याग कर निज देश-रक्षा रूप सेवा-कार्य सम्पादन करैं, क्योंकि स्वकार्य सम्पादन पटीमान व्यक्ति ही धीमान्

कहलाते हैं। स्वकार्य-भ्रंशता तो मूर्खता ही है। इसी लिये तो हमारा निति-शास्त्र उच्चस्वर से बार बार कहता आ रहा है।

'अपमानं पुरतः कृत्वा—
मानं कृत्वा हि पृष्ठतः।
स्व कार्यं साधयेद् धीमान्—
कार्य भ्रंशो हि मूर्खता।'

ओ भारत देश-कमल-प्रभाकर नव युवको! देश-सेवा-कार्य में आप भी पीछे न होवैं। क्योंकि समस्त देश की शक्ति तो आपही में छिपी है। आपही तो सदा से भारत देश-यशः पताका के आधार भूत दण्ड रहे हैं। जिसके बिना पताका का कोई अस्तित्व ही नहीं है। आप अपने स्वरूप की याद तो करैं। आपके निःस्वार्थ परायण सेवा-कार्य को देखकर अहर्निश विद्रोही गण दाँतो तले अंगुली दबाते हैं। आपही में तो 'आरूणि' हुए हैं। जिन्होंने बाढ़ की प्रचण्ड धारा में सोकर—जो सर्वथा असम्भव है गुरु-भक्ति की परा काष्ठा दिखाई थी। आपही में भीषण प्रतिज्ञा कारी ब्रह्मचारी भीष्म हुए हैं। जिनकी प्रचण्ड-प्रतिज्ञा के सामने समस्त संसार चकित हो उठा था।

ओ भारत के रत्न-भूत नव जवानो! अब देर करने की आवश्यकता नहीं है। अपने प्राण-प्रिय भारत देश की रक्षा के लिये तन मन धन से तैयार हो जायँ। आपको याद ही होगी उन नव युवक लव और कुशकी कथा; जिन्होंने अत्यल्प अवस्था ही में लंका विजयी समस्त वानरी-सेना को अपनी शक्ति-मूठी में रख लिया था।

ओ भारत देश रूपसागर को बढ़ाने वाले युवकचन्द्र ! आप ही में न उन अमलात्मा अमर-वीर अभिमन्यु का प्राकट्य हुआ था; जिनके शौर्य-सूर्य्य के सामने सभी विरोधी उलूक छिप गये थे। ओ भारत प्राण-धन युवको ! आपही मानव रत्न हैं। आपही देश के गौरव हैं। आप आपही देश की शोभा हैं। आप मानव हितैषी मनुष्य-रत्न हैं। क्योंकि मनुष्य वही है जो मनुष्यों के लिये सब कुछ निछावर करता है। अतः हम और आप को मृत्यु से डरना नहीं चाहिये। किसी देश भक्त विद्वान् ने लिखा भी है:—

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिये
मरा नहीं वही कि जो जिया न आप के लिये।
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप ही सदा चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥ १ ॥
क्षुधार्त-रन्ति देव ने दिया करस्थ थाल भी
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थि जाल भी।
उसी नर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया
सहर्ष वीर कर्ण ने स्व चर्म दान भी किया।
अनित्य देह के लिये अनादि जीव क्या डरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ॥ २ ॥

ओ मेरे प्यारे बन्धुओ !

आप इस बात को याद रक्खें कि कोई भी मनुष्य हमेशा के लिये यहाँ रहने नहीं आया है। अर्थात् जो यहाँ आता है उसको अवश्य जाना पड़ता है। इसी लिये तो देश भक्त जगद् गुरू श्री रामानन्द स्वामी जी के प्रिय शिष्य श्री कबीरदासजी ने कहा था कि :—

'एक दिन ऐसा हो गया—
कोइ काहू के नाहि।
घरकी नारी को कहे
तन की नारी जाहि ॥'

समस्त विश्व जिसके नीतिशास्त्र को हृदय से स्वीकार किया है वे महान विद्वान् श्री विष्णु शर्मा ने भी अपने पञ्चतन्त्र में कहा है :— यदि अनित्य और मल-वाही इस देह से नित्य और निर्मल यश तथा धर्म मिला तो क्या नहीं मिला अर्थात् सब कुछ मिला। जैसे :—

'यदि नित्य मनित्येन
निर्मलं मलवाहिना।
यशः कायेन लभ्येत,
तन्न लब्धं लभेन्न किम् ॥

ओ भारतीय नगर-वन-सिंह युवको ! आपकी शक्ति के सामने आपके विरोधी-देश के सभी नर-पशु छिप जायँगे या आपके वश हो जायँगे।

ओ पवित्र भारत देश की महान् शक्ति मेरी बहनो ! आप भी देश-सेवा के द्वारा अपनी 'शक्ति' संज्ञा को सार्थक करें। आपके लिए तो जो कुछ कहा जाय सब अत्यल्प ही होगा, क्योंकि आपने ही तो सभी युगों में

अपने देश की और धर्म-प्राण मानवों की रक्षा की है। श्री रामावतार में भगवती श्री सीता के रूप में आपही तो थीं। समय समय पर आप भी किसी से पीछे न रही हैं।

ओ मेरे देश की विभूति देवियो! आपही में न मैत्रेयी, गार्गी, सदालसा, सुकन्या, सावित्री, अंशुमती और द्रौपदी तथा इस युग में भी वीरांगना श्री लक्ष्मी बाई और श्री दुर्गा बाई प्रभृति के रूप में प्रकट होकर अपने देश की रक्षा की है। जिनका गान उपनिषदों से लेकर आज की लोक-भाषा तक लोग कर रहे हैं। क्या आज आप इस बात को भूल गई हैं? अन्त में मैं पुनः सबों से प्रार्थना करूँगा कि हम सभी मानव मिल कर देश की रक्षा में लग जायँ जिससे इसकी सर्वथा रक्षा हो सके।

जय भारत। जय सीता राम।

लेखक की लिखित पुस्तकें

श्री रामानन्द चरितम् (हिन्दी टीकोपेतम्)		।-)
तीर्थ-यात्रा	(हिन्दी)	।)
प्रियतम प्रार्थना	(मैथिली)	।-)
गंगा-गुण-गान	"	।-
मनोबोध तैंतीशा	"	१० न. पै.
महादेवस्तुति	"	१० न. पै.
विनय बतीशा	"	१० न. पै.
प्रिय पुकार पुकार	(हिन्दी)	।-)
शंकर स्तुति	"	।)
श्री सीताराम स्तोत्रम्	(हिन्दी, संस्कृत बंगला)	।)
श्री सीताराम पञ्चस्तवी	"	५ न. पै.
करुणाशतकम्	(संस्कृतम्) अमुद्रित	
वैद्यनाथ स्तोत्रम्	" "	
श्री रामानन्द पञ्चस्तवी	" मुद्रित	
श्री सीतारामादि पञ्चस्तवी	" "	१२ न. पै.

पुस्तक प्राप्ति स्थान

● आदर्श श्री रामानन्द महाविद्यालय

शंकुधारा, वाराणसी–३

● अभिराम पुस्तकालय

अन्टौर नवादा, दरभंगा (बिहार)

॥ श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ॥

॥ श्रीमतेरामानन्दाय नमः ॥

हमारा कर्तव्य

[२२-१० ६२ के अवसर पर दिया गया देश-प्रेम-पूर्ण भाषण]

रचयिता

अभिरामदास शास्त्री

प्रकाशक

अभिराम पुस्तकालय

अन्टौर नवादा, दरभङ्गा (बिहार)

प्रथम संस्करण १००० } गान्धी जयन्ती १९६३ { मूल्य १० नये पैसे